त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

तिथि : 1-3 फरवरी 2023

भारतीय भाषाएँ : साहित्य, समाज और राजनीति का अन्तःसम्बन्ध

आयोजक

मानविकी विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

बी- 4, क़ुतुब सांस्थानिक क्षेत्र नई दिल्ली -110016

संरक्षक

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक

कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

सानिध्य

प्रो. सविता

अधिष्ठाता, आधुनिक विषयपीठ

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत केंद्रीय विश्वविद्यालय

संयोजक

प्रो. मीनू कश्यप

अध्यक्ष, मानविकी विभाग,

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

प्रो. जगदेव कुमार शर्मा

आचार्य (हिंदी), मानविकी विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

डॉ. अभिषेक तिवारी

सहायक आचार्य, (अंग्रेजी), मानविकी विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

पंजीकरण

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभाग करने के लिए विश्वविद्यालय के मानविकी विभाग में ऑफलाइन अथवा https://forms.gle/gYbKPDFqteRAmNvv8 पर ऑनलाइन पंजीकरण करना आवश्यक है|

पंजीकरण शुल्क :

प्राध्यापक – 200

शोधार्थी -100

नोट- पंजीकरण शुल्क सेमिनार से पूर्व ऑफलाइन लिया जाएगा |

शोध पत्र हेतु निर्देश

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध पत्र वाचन हेतु विषय से सम्बंधित शोध प्रपत्र सादर आमंत्रित हैं | शोध पत्र विषय से सम्बंधित किसी उप शीर्षक पर 31 जनवरी 2023 तक ईमेल seminar.manviki@gmail.com पर प्रेषित करें|

नोट – प्रतिभागियों को अपने ठहरने की व्यवस्था स्वयं करनी होगी |

विषय की रूपरेखा

भाषायी दृष्टि से भारत एक समृद्ध और संपन्न राष्ट्र है | भारत में कई भाषाएँ बोली और समझी जाती है | किन्तु भारतीय संविधान में मात्र 22 भाषाओं को ही मान्यता प्राप्त हुई है | भाषाएं केवल भाषिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि व्याकरणिक दृष्टि और साहित्यिक दृष्टि से भी समृद्ध हैं | भारत की इसी समृद्धि और समपन्नता को रेखांकित करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारत की मातृ-भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर दिया गया है | मानविकी विभाग द्वारा इस गौरवशाली परंपरा को जन मानस तक पहुंचाने के लिए तथा भारतीय भाषाओं के महत्त्व एवं उसकी स्थिति को समझने के लिए त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 1-3 फरवरी 2023 को किया जाएगा | जिसके अंतर्गत भारतीय भाषाओं का राजनीति, समाज और साहित्य से अन्तःसम्बन्ध को उद्घाटित करने का प्रयास किया जाएगा साथ ही यह राष्ट्रीय संगोष्ठी भाषायी एकता के माध्यम से अखिल भारतीय सामाजिक समरसता में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगी, और भारत की राष्ट्रीय एकता, अखंडता, आपसी भाईचारे के साथ-साथ सांस्कृतिक विविधता के महत्वपूर्ण पहलुओं से परिचित कराने में भी सहायक सिद्ध होगी|

उप-विषय

- भारतीय भाषाएँ और हिंदी
- हिंदी भाषा साहित्य और राजनीति का अन्तःसम्बन्ध
- हिंदी साहित्य में सामाजिक एवं राजनितिक चेतना
- राष्ट्र निर्माण में हिंदी का योगदान
- हिंदी भाषा एवं साहित्य : विविध आयाम
- भाषा की सामाजिक उपादेयता
- भाषा :विकासशील समाज की पहचान
- भाषा और सामाजिक विज्ञान
- Indian society and culture
- Literature and Women Empowerment
- Modern forms of Indian Society
- Literature and national integration
- World peace through literary heritage
- Minority, languages and culture
- Critical perspectives on emergent literatures
- Understanding diasporic narrative
- Reading cultural expressions in Indian context
- Analysing any text from ancient to post colonial text
- Tracing peace and harmony in Indian English literature

सम्पर्क

श्रीमती वंदना शुक्ला (समाजशास्त्र)
9101126193

डॉ. स्वेता यादव (समाजशास्त्र)
9450178746

डॉ. आलोक कुमार (राजनीति विज्ञान)
8460931297

डॉ. राहुल प्रसाद (हिंदी)
8368048147

डॉ. प्रेमलता देवी (हिंदी)
8115980388

डॉ. हिमानी शर्मा (अंग्रेजी)
9034310377